# किशोरवय के छात्र–छात्राओं में व्यक्तित्व का विकास–कक्षा शिक्षा के माध्यम द्वारा।

डा0 सुधा मिश्रा
सहायक आचार्य ,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
नगर निगम डिग्री कालेज,
लखनऊ

**सारांश** – वर्तमान में देश के भावी कर्णधार(युवा वर्ग) जिन पर सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विकास का उत्तरदायित्व होता है, वही समस्याग्रस्त है। उनकी विभिन्न प्रकार की समस्याएं दिखायी देती हैं जिनमें सर्वप्रमुख हैं स्वविचारों का आभाव, जहॉ स्वंय का कोई विचार नहीं होता वहीं अस्तित्व का संकट बालकों को प्रतीत होने लगता है। समाज का किशोरवय प्राप्य की चेष्ठा नहीं करता अप्राप्य की व्याकुलता को प्रदर्शित करने लगता है । जिसके परिणामस्वरूप किशोरवय में व्यवहारगत समस्याएं भी प्रगट होने लगती हैं। ऐसे में समाज का महत्वपूर्ण स्तम्भ विद्यालय का उत्तरदायित्व और अधिक बढ जाता है।

**परिचय** – किशोरवय में व्यक्तित्व के संतुलित विकास हेतु यह आवश्यक होता है कि समाज में जो तत्व प्रमुख रूप से दिखायी देता है उसपर विचार किया जाय तदपश्चात शिक्षा के माध्यम से उचित एवं अनुचित का भेद किशोरवय को समझाया जाय। जिससे उनके अन्दर स्वतः कुछ सोचने की इच्छा जागृत हो सके। बालक की इस इच्छा को कार्य रूप में परिणित करने हेतु इस प्रकार कक्षा शिक्षा को प्रबन्धित किया जाय। जिसके परिणाम स्वरूप इच्छित फल प्राप्त हो सके। और बालक अपने लक्ष्य को निर्धारित कर सके। लक्ष्य निर्धारण के पश्चात लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए योजना का निर्माण किया जाता है। योजना के निर्माण में प्रबन्ध की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रबन्धन को निम्न बिन्दूओं में स्पष्ट किया गया है।

**प्रबन्धन क्या है** – निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक योजना बनाना अर्थात उचित समय पर उचित सामग्री का उचित रूप से उपयोग करना जिससे निर्धारित लक्ष्य को सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके ।

प्रबन्धन का मुख्य उददे्श्य होता है – Minimum resources being used in achieving maximum Return.

1. **प्रबन्धन का क्षेत्र –** वर्तमान में प्रत्येक क्षेत्र में प्रबन्ध की महती आवश्यकता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अल्प समय में अधिकतम लाभ चाहता है। अतः इस दृष्टिकोण से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रबन्ध करना अनिवार्य हो जाता है। उदाहरण स्वरूप जीवनचर्या (लाइफस्टाइल) का प्रबन्धन , कार्यालय प्रबन्धन एवं इच्छाओं व उत्कण्ठाओं का प्रबन्धन आपदाओं का प्रबन्धन, विकास का प्रबन्धन आदि।

2. **प्रबन्धन का महत्व –** प्रबन्धन का महत्व तब और अधिक बढ जाता है जब किसी वस्तु का आभाव दिखायी देता है। जैसे परीक्षा देते बालक के लिए निर्धारित घंटे, किसी पीडित व्यक्ति की पीडा दूर करने में व्यतीत समय और किसी आपदा को रोकने के लिए किये गये कार्य आदि।

उपर्युक्त कार्यों में प्रबन्धन का महत्व स्पष्ट होता है क्योंकि यदि इनक कार्यों को एक योजना बनाकर उसे कार्यान्वित किया जाये तो सफलता की संभावना का प्रतिशत निर्विवाद रूप से बढ जाता है।

3. **प्रबन्धन की चुनौतियां–** प्राचीन समय में प्रबन्धन का कार्य एक व्यक्ति में निहित था जिसे प्रशासक/प्रबन्धक के रूप में माना जाता था और यह समझा जाता था कि वह व्यक्ति सभी कार्य को कुशलतापूर्वक करता है या उसे करना चाहिए। परन्तु शनैः शनैः इस सोच में परिवर्तन हुआ ।

प्रबन्धक को प्रशासक न समझकर मात्र प्रबन्धक माना जाने लगा और यह समझा जाता था कि वह व्यक्ति परिस्थितियों के अनुरूप कार्य करता है ।

किन्तु यह विचारधारा भी बहुत समय तक स्थिर न रह सकी और यह माना गया कि प्रबन्धक ऐसा व्यक्ति होता है जो कार्य में सहायक होता है। किन्तु वर्तमान में प्रबन्धक का पूर्ण रूप पूर्णतया परिवर्तित कर दिया गया है।

अब यह माना जाता है कि प्रबन्धक संस्था में कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों के अन्दर निहित होता है, जिसके अन्दर इसे प्रगट करने की क्षमता होती है और दूसरों को प्रभावित करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का कौशल होता हैं (Leadership Quality) नामकत्व तथा जो स्वंय उदाहरण बन सकता है, उसकी ही प्रबन्धक के रूप में स्वीकार्यता होती है।

**प्रकरण–** किशोरवय के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के संतुलित विकास हेतु स्वामी विवेकानंद के विचारों को यदि कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त किया जाय तो निश्चित रूप से किशोरवय के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का संतुलित विकास हो सकता है। यथा – स्वामी विवेकानंद के विचारानुसार शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है। अतः शिक्षा का उददेश्य इस प्रकार हो कि व्यक्ति अपने लक्ष्य को सुगमतापूर्वक एवं सामाजिक ढंग से प्राप्त कर सके।

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के निम्नलिखित उददेश्य निर्धारित किये। –

(क) आंतरिक पूर्णता का वाहय प्रकाशन होना चाहिए।

(ख) व्यक्तित्व में मनुष्यत्व का विकास होना चाहिए।

(ग) मानव व समाज की सेवा का भाव जागृत होना चाहिए।

(घ) शारीरिक विकास होना चाहिए।

(च) जिविकोपार्जन की क्षमता उत्पन्न होनी चाहिए तथा

(छ) विश्वबन्धुत्व का विकास होना चाहिए।

उपर्युक्त उददेश्यों को प्राप्त करने के लिए कक्षा शिक्षण निम्नलिखित रूप से प्रबन्धित किया जाना चाहिए :–

स्वामी विवेकानन्द ने उदेदेश्यों को प्राप्त करने के लिए लौकिक एवं अध्यात्मिक विषयों तथा कियाओं के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों के प्रयोग पर विशेष बल दिया है :–

## 1. योग विधि :–

इस विधि के विषय योग सूत्र में लिखा है :–

योगः चिन्तवृत्तिः निरोधः।

अर्थात चिन्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। इस विधि को वर्तमान में कक्षा शिक्षण में सरलतापूर्वक नियोजित किया जा सकता है।

छात्र–छात्राओं को कक्षा शिक्षण हेतु आवश्यक सामग्री (जो विषय से सम्बन्धित हो ) के साथ प्रवेश कराया जाये, तदपश्चात मात्र कुछ क्षणों के लिए नेत्र बन्द करने के लिए कहा जाय।

इस प्रक्रिया से बालक का मन शान्त होगा। और शिक्षक के विचारों को सुनने तथा समझने की क्षमता उत्पन्न होगी।

## 2. केन्द्रीयकरण विधि :–

इस विधि में व्यक्ति को अपने को एकाग्र और केन्द्रित करना पडता है। इस विधि का प्रयोग कक्षा शिक्षा में निम्न रूप से किया जा सकता है। किसी तथ्य को अध्ययन के पश्चात पूर्ण रूपेण उसी प्रकार स्मरण करने के लिए न कहा जाय वरन् उस तथ्य के विषय में सोचने के लिए कहा जाय।

इस प्रक्रिया से बालक में तथ्यों के विषय में स्वयं का दृष्टिकोण विकसित हो सकता है।

## 3. उपदेश विधि :–

स्वामी विवेकानन्द ने उददेश्य विधि के द्वारा शिक्षा ग्रहण करने को एक आदर्श स्थिति बताया है, उनके विचारानुसार बालक को गुरू–ग्रहवास करना चाहिए और उनके उपदेशों को ध्यानपूर्वक सुनना और समझना चाहिए।

वर्तमान में यह स्थिति अंशत हॉस्टल के माध्यम से पूर्ण की जा सकती है। परन्तु सभी छात्र–छात्राएं ऐसा नहीं कर सकते । अतः सप्ताह में एक दिन प्रत्येक शिक्षक समाज और बालक के विषय पर चर्चा करें । और अपने उन्नत विचारों को बालकों तक पहुॅचाये।

इन विचारों को बालक सुन व समझकर अपनी प्रतिक्रया दे ऐसा वातावरण शिक्षक द्वारा तैयार किया जाये।

4. **अनुकरण विधि** – इस विधि में बालक को अपने गुरू का अनुकरण करना होता है । इस पर स्वामी विवेकानंद ने लिखा है कि छात्र अपने बाल्यावस्था से ही ऐसे गुरू के साथ रहे जिसका चरित्र जाज्वल्यवान हो और छात्र के सामने उच्चत्म त्याग का उदाहरण हो।

इस विधि के लिए वर्तमान में कक्षा शिक्षक की दृष्टि ऐसी हो जिसमें सभी छात्रों को समान रूप से समझा जाय। अनुशासनात्मक कोई समस्या उत्पन्न होने पर शिक्षक दोनों पक्षों को सुने व समझे तत्पश्चात कार्य करें।

इस प्रक्रिया से बालकों के मन में शिक्षक के प्रति आदर भाव व श्रद्धा भाव उत्पन्न होगा। और बालक शिक्षक का अनुकरण कर सकेगा।

5. **परामर्श विधि एवं व्यक्तिगत निर्देशन विधि** – स्वामी जी के विचारानुसार सभी व्यक्तियों के जीवन में कभी न कभी परामर्श की आवश्यकता अवश्य आती है इस स्थिति में व्यक्ति को उचित परामर्श प्रदान किया जाना चाहिए। तथा उसकी समस्या का व्यक्तिगत निर्देश भी दिया जाना चाहिए।

इस विधि को वर्तमान में अत्यधिक उपयोगिता है। अतः कक्षा शिक्षा में शिक्षक नैतिकता पर बल देते हुए बालकों से प्रश्न करे और उनके विचारों को सुने। तदपश्चात उन विचारों पर अपना निर्देश दे।

6. **क्रियात्मक व व्यवहारिक विधियां** – स्वामी विवेकानंद का मानना था कि स्वस्थ्य शरीर मे स्वस्थ्य मस्तिस्क होता है अतः अनेक बार की क्रियाओं द्वारा बालकों का शारीरिक विकास व मानसिक विकास किया जाना चाहिए।

वर्तमान में इस विधि को कार्य रूप में लाने के लिए विद्यालय विभिन्न प्रकार के खेल कूद की व्यवस्था करें। विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन करके बालकों का शिरीरिक व मानसिक विकास कर सकता है।

7. **निष्कर्ष एवं सुझाव** :– उपर्युक्त विधियों को यदि लागू किया जाये तो बालकों में शारीरिक शक्ति व मानसिक विकास दोनों ही पर्याप्त रूप से विकसित हो जायेगे। जिसके परिणामस्वरूप किशोरवय के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का संतुलित विकास हो सकेगा।

प्रस्तुत प्रक्रियाओं में सर्वप्रथम शिक्षक के विचार सामाजिक एवं अनुकरणीय होने चाहिए। तदपश्चात उसे कक्षा शिक्षण में प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

## संदर्भ ग्रन्थ –


1. गुप्त, राम बाबू , महान भारतीय शिक्षा शास्त्री।
2. सहाय ,आई0एम0 , आधुनिक कार्यालाय प्रबन्धन ।
3. समाचार पत्र – दैनिक जागरण व हिन्दुस्तान।
4. विद्वतजन के विचार।

# CURRICULUM VITAE

- Name : Dr. Sudha Mishra
- Designation&Department : Assistant Professor (Education Department)
- Date of Appointment : 12 August 2017.
- Date of Birth : 17-07-1970
- Address : C-27, Buttler Palace Colony Jopling road near Hotel Sagar International,Lucknow-226001
- Phone No. : +91- 9415323740
- E-mail : **sudhamishraom@gmail.com**
- Qualification : Ph.D., M.Ed., L.L.B
- Achievements : Total Seventy,Matters has been resolved during counselling in U.P. State Legal Authority, Lucknow
- Administrative Positions in Collage(Member of some committee etc. ) : NA

  1-

  2-

  3-

- Academic Achievements :

  (A) Books : प्रौढ शिक्षा में महिलाओं की स्थिति
  **(ISBN: 978-93-82361-19-0)**

  (B) Paper Published :

  1– पारिवारिक न्यायालय और मानवाधिकार : लखनऊ का एक अध्ययन' in International Seminar of Future of Humar Rights, Humanity & Culture in Emerging

Globlized World organized by All India Rights Organization (AIRO) in association with Indian Association of Social Scientists and SJNPG Collage, Lucknow (9Th & 10Th December, 2012)

2–प्राचीन भारत में मूल्य एवं शिक्षा' Presented in National Seminar on "शिक्षा में शाश्वत जीवन का मूल्य" Organized by Sampoornanand Sanskrit University, Varanasi (10TH January, 2016).

3– 'भारत में कार्यस्थलों पर महिलाओं का यौन शोषण : उदभुत सम्भावनायें एवं मुददे 'Presented in ICSSR sponsored Two days National Seminar on ' Sexual Harrassment of Women at work place in India : Emerging Perspective and Issue Organized by Dr. Rajendra Prasad Memorial Girls Degree Collage, Lucknow in association with All India Rights Organization (AIRO) (12TH & 13TH March, 2016)

4– 'उच्च शिक्षा की चुनौतियां : उत्तर प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में' Presented in National Seminar on 'उच्च शिक्षा की चुनौतियां एवं बदलाव की आवश्यकता' Organized by Kalicharan Post Graducate Collage, Lucknow (Aided by U.P. Government and Associated with University of Lucknow) (5Th & 6Th October, 2016).

## (C) Workshops/RC/Training Attendence :

**1-** National Seminar on 'Challenges Befor Indian Youth in 21St Century' Jointly organized by Sri Jai Narayan Post Graduate Collage, Lucknow & Circle for Child and Youth Research Cooperation in India (19Th & 20Th February, 2009).

**2-** National Seminar on 'Human, Humanity & Discrimination in India' Jointly organized by All India Rights Organisation(AIRO) & Indian Association of Social Scientists (21Th March, 2012).

**3-** Special Training Programme of Academic Counselors organized by Indira Gandhi National Open Univeristy (19Th October, 2013).

**4-** Workshop on Gender, Equility, Justice & Women Empowerment Organized by Oxfam India and Kalichanran PG Collage, Lucknow (9Th December, 2015)

**5-** Two day Orientation Programme for Academic counselors for B.Ed. Programme organized by Indira Gandhi National Open University, Regional Centre, Lucknow (7Th & 8Th September, 2016)

❖ Any Other : Counselling